

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ५१६५ (१६५)

ग्रंथ नाम करण त  
रसंग्रह.

विषय मराठी काव्य.

क्र. ३३

मराठी

कोठे ✓

देवीदास-करुणाभूतरसंग्रह

५१६।५१६

क्षेत्र



(1)

॥ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अर्जुनस्य भ्रातॄणां  
॥ श्रीकृष्णस्य वचनं ॥ अर्जुन उवाच ॥  
॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ अर्जुन उवाच ॥



✓

(2)

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमोजियेकदंतादे  
॥ विगौरीचीयासुता ॥ करुणाकरादयावता ॥  
॥ लंबोदराआदि ॥ १ ॥ नमनमासेसा  
॥ रजेमाये ॥ मज ॥ पादुशिपाहे ॥ वाचेक  
॥ हरीगुणगाये ॥ १ ॥ सोयेवदवाकी ॥ २ ॥  
॥ नमनमासे ॥ श्रीगुरुनाथा ॥ वयाळुकावे  
॥ लिसमर्था ॥ हरीगुणनामामंतकथा ॥

॥ १ ॥



Sanskrit Sanstha, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Dhule

(2A)

वदवाकीआतायेथारुचि॥३॥नमनमासे  
श्रोतयाप्रति॥कथापैकावीपरमप्रीती॥  
जेपावनत्रीजेगती॥चंद्रमाप्रतिनीवेदी  
तो॥४॥सककसु॥चाइहोपुर्णब्रंह  
वेकंउेश॥स्थीर॥नीयामानस॥हरी  
हरीचरीत्रश्रवणकीजे॥५॥ज्यापासुनी  
नीमिणत्रीगुण॥प्रकीस्तवजाळासगुण॥

(3)

शे शा चै की आवत से न ॥ अक जन उ घरी लो ॥  
॥६॥ ऐसा जो जग नीवास ॥ चरीत्र या ये आ  
लो लीक ॥ श्रोती ॥ चैत ॥ आदरे कर  
॥११॥ नीपरी सावे ॥ ॥१॥ जया जी श्री वे कंठे  
शा ॥ पुराण पुर वे सा ॥ परेशा ॥ अकायी  
पुर की सी आवा ॥ मा सी उ पेक्षा का के ली ॥  
॥८॥ युगा युगी अका सी ॥ स्मरता पाव सी

(3A)

रुषी केशी ॥ तो तु आक सयुक्त जा लासी ॥ म  
जन पावसी स्मरण मात्रे ॥ १ ॥ गज इद्र सकं  
गी आक वी तु ज ॥ क का सावी सजा ला ॥ १ ॥  
ख ॥ ते का चाको न उ ध्य ज ॥ गजी द्रेंचो  
ज मनी कैले ॥ १ ॥ ते न रु वी दारी ला ॥  
गजे द्र तु वा सो उ वी ला ॥ तो पुरु षार्थ काय कला  
न कळे मज स्वामी या ॥ १ ॥ द्रो पदी आणी

(4)

लाखाजोहारीरक्षितेःवीषआमृतासा  
दिखेकेले॥जयद्रष्टाचेरणीवाचवीले॥  
॥३॥ पार्थलागीजग॥१॥ क्रुतायुगीप्र ॥३॥  
कादाप्रहिरण्वक॥ पेकेलियापदा॥  
स्तमिआवतरोनिगाविदा॥ रक्षणकेले  
पैसाचे॥१८॥ त्रिनायुमीविभिन्नाण॥ आ



Project of the Yashwantrao Chavan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Mandal, Dhule

(4A)

छा म्हणोनीआळवीतुज ॥१४॥लेकाउगीका  
सीनीजसुरा ॥पैकोनीप्रौपदीचियाकर्ण  
तःरा ॥धावीनका कागवीरा ॥सारं  
गधरालेवेळि ॥१५॥स्यासीळेद्रौपदिसि ॥  
प्राजीचेपानमागानीचेसी ॥काहीनकश  
मतापांउवासि ॥रुषेस्यरासित्रपकेळे ॥१६॥

(5)

कीसजास्थानी॥खळदुरासाबोळेवाणी॥

नग्नकरायाशशयनी॥तेकाचक्रपाणी

स्मरकीतुज॥१२॥उसीवाकुनीमागे॥

धावीनलासील॥गे॥वखेपुरवीकी॥११॥

आनेगा॥सखेरा॥१३॥वनि

आसतापांडवागनादुर्वीसदेवआळेओ

जना॥तेकाजाउनीवदावना॥ऋष्यारु



Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(5A)

अन्यन्यभावे आकाशरणगतया सिद्धे उनि  
लंकागुवन ॥ आक्षयकरोनि स्थापित्ता ॥ १९ ॥  
धुरबैसवित्ता अ... पदि ॥ ज्यापदासिठं  
कनाहिकधी ॥ ते... दीधले क्रुपानिधी ॥ ॥ ५ ॥  
महिमावे दिवंगीज ॥ २० ॥ उपमन्यासुशी  
कबाकक ॥ माउलीसुदुधमौनीकक ॥



Paikarwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(6)

देवदेईल ऋषोनीकोतुकेःसहजकेलेनी  
येनेशभाकेकेलेतसेस्मरणतुदयाकु  
सागरपरिपुपा) कासिक्रुपाकु हो ॥३॥  
उने॥द्विरसिधुला॥शयिममय  
त्रासलिकुंठणि॥उकमिसेस्मरेचक्रपा  
पी॥येकडिजेकापापखाणि॥तेवैकुण्ठ  
सदनीपावविलि॥२३॥आजामेकेब्रौकण॥

लेता



(6A)

॥१॥

॥१॥

विषये सगे जा ला उं स जन ॥ पुत्र मि से ना  
 रा ये ण ॥ म्ह णो नी तु जे स्मरण के ले ॥ २४ ॥  
 धा वि न ला सि त म ने का ॥ ये मु ने त हो  
 ता आ जा मे का ॥ स ये ले तु वा ग पा का ॥  
 मे वि दा ॥ २५ ॥ मि त जे जा उ नि व नां त रि ॥  
 प क्क फ के वो रि प्र सी ॥ ज्वा खो नि फ के पा हे  
 नि घं रि ॥ स्वा द वे ख रि पै ला गे ॥ २६ ॥ उ चि



सीः  
 संक व द

(7)

एक के जमा करि ॥ तुजला गिया पीहरी ॥

जाव देखुनि नी घंरी ॥ याचा आगी करी

जाता सी ॥ २५ ॥ राजि मंडुकवाकी ॥

ज्याळा लागलिये ॥ आता मरेन ये ॥ २६ ॥

काकी ॥ म्हणे नीवनाचि स्मरति तुज ॥ २७ ॥

तेको पावता सी गोपाळा ॥ ज्याळा केलिया



Digitized by Sankarshan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(7A)

सीतळा ॥ वाचविले मंडुकवाळा ॥ आड्डु  
 वळिका लरीतुजी ॥ २८ ॥ पक्षी होता ॥ ६० ॥  
 वक्षावरि ॥ वरुण विलावाधुरि ॥ पा  
 रधीस सांणस तयावरि ॥ मगवा  
 णगुणी लावीला ॥ ३० ॥ तिका पक्षियाने  
 केले तुझे चिंतन ॥ मगधावीने लासी

॥ ६० ॥



(४)

व्याक होउन ॥ पारधि यासंजै सुन ॥ ग  
तिचा बाण निकला ॥ ३१ ॥ याने पाठिका  
ससांणा ॥ पक्षी ॥ ने गेला गगना ॥  
ऐसे ब्रह्म संरक्ष ॥ का गितु से आवता  
रा ॥ ३२ ॥ हारण ॥ विआणी पाउसे ॥  
की ग करि तिरहिवासे ॥ पारधी याने  
ये उनी कैसे ॥ ये का ये की पैकेले ॥ ३३ ॥

(8A)

शिव ताळा विला वेंणवा ॥ स्वाने सोडी  
ता घेति धावा ॥ नी दान जाणे नी मा  
घवा ॥ तु से स्र प के के ॥ ३ ॥ जे के  
प्रक व छं कामु ॥ प्र ये न आणी ला  
ते आव स्वरी ॥ नी वी स वी ला नी  
घरी ॥ मार्ग हरी नी सी पै जा ला ॥ ३ ॥  
हरी च द्र जाणी तारा म लि ॥ नी वी ण तु

(१)

जल्मी स्मरति ॥ आरी कदु रकरोनी श्री  
पत्नी ॥ राज्ये पदी स्या पीला ॥ अधा भक्त  
वंस कामुरारी ॥ ली सी पाता जी दी  
धनी पुरी ॥ यु गो व ली न ही ॥  
घार रा ख सी न ॥ ३७ ॥ तु ज उ द्वे  
सै आं ब र सी ॥ व न करी ये का द सि ॥  
क्रु पा उ हो उ नी न या सी ॥ दा हा आ

॥८॥

॥८॥



(9A)

वतार तु वा घरि सि ॥३८॥ सुख मा गद  
करि ये का द सि व त्त ॥ या सि जा ला सी क्रु  
पा वं त ॥ न ग र न ॥ शी क लो क ॥ स क  
न ठे ग र ने ले वै कु ॥ धा पे धा करि पा  
षा ण पु जा ॥ ते पु ॥ सी आ धो क्ष जा ॥  
ज्या चे म नी भा व ना हि दु जा ॥ सा च्या का  
जा पा व सि ॥४०॥ उ ष वा सि व जि धा र ण



(10)

क॥ तो मनीजानावीक क॥ त्यासी होउ  
नी स्नेहाक॥ देवतार्थनदाखविले ॥४१॥  
आवघे जलदाः तुतीमिंत ॥ उधवा  
सीवीस्मिंशोर वां बहुत ॥ जलकैवा ॥४२॥  
रीजगवंत ॥ अतिआनुतवागले ॥४३॥  
दावाग्नी पउता गोपाका ॥ लैनीजमु



Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.



## मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

---

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे  
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)  
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८  
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com